नित्य देव तर्पण और पितृ तर्पण हेतु सरल विधि

स्वामी रुपेश्वरानंद जी महाराज द्वारा संशोधित

देव तर्पण श्लोक (मंत्र) :

१- पूर्व मुख , २. कुश सीधे कर अग्रभाव पूर्व की ओर , ३ . सव्य , ४ . दाहिना घुटना भूमि पर , ५. देवतीर्थ से जल छोड़ें ..

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः !

पिशाचा गुह्यकाः सिध्दाः कुष्मांडास्तरवः खगाः !!

जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः !

तृप्तिमेते प्रयांत्वाशु महत्तेनाम्बुनाखिला : !!

पितृ तर्पण श्लोक (मंत्र) :

१- दक्षिण मुख , २. कुश मोड़कर उसके दोनों अग्रभाग को दक्षिण की ओर करे , ३ . अपसव्य , ४ . बायाँ घुटना भूमि पर , ५. पितृतीर्थ से जल छोड़ें ..

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिता !

तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम् !!

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः !

तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः !!

अतीतकुलकोटिनां सप्तद्वीपनिवासिनां !

आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् !!

(गंगाजल से तर्पण कर रहे हो तो “ तिलोदकम् ” के स्थान पर “ गंगाजलम् ” कहें !)

सव्य – पूर्व मुख होकर यज्ञोपवित और अंगोछा (गमछा) बाएं कंधे पर हो और दाहिना घुटना जमीन पर लगा हो, तो इस अवस्था को “ सव्य ” होना कहते हैं ! (इस अवस्था में देवता के लिए तर्पण होता है !)

अपसव्य – दक्षिण मुख होकर यज्ञोपवित और अंगोछा (गमछा) दाहिने कंधे पर हो और बायाँ घुटना जमीन पर लगा हो, तो इस अवस्था को “ अपसव्य ” होना कहते हैं ! (इस अवस्था में पितृओं के लिए तर्पण होता है !)

- स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम की ओर से प्रेषित ..

अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट देखें : <https://swamirupeshwaranand.in/>